भारत के वर्तमान को जानने के लिए हिंदी है प्रभावी भाषा- कुलपति विभूति नारायण राय

हिंदी विश्वविद्यालय विदेशी शिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम का हुआ उदघाटन

श्रीलंका, मॉरिशस, हंगरी, न्यूजीलैंड, रशिया, क्रोशिया, बेल्जियम, चीन व जर्मनी के अध्यापक 10 दिनों तक पढेंगे हिंदी का पाठ

वर्धा दि. 31 अक्तूबर 2011- वर्तमान भारत को जानने के लिए हिंदी को जानना और समझना जरूरी है। हिंदी के प्रचार और प्रसार में महात्मा गांधी, बॉलीवूड की हिंदी फिल्में, व्यापार और तीर्थयात्राओं को बड़ा महत्व है। इन माध्यमों ने हिंदी को पूरे विश्व में प्रचारित किया है। आज यह स्थिति है कि पूरी दुनिया में बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी दूसरे स्थान पर है। विदेशों के करीब 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। हिंदी ने अन्य भाषाओं की तुलना में संस्कृत से अधिक लिया है और इस लिहाज से संस्कृत भाषा हिंदी की मां है। उक्त आशय के उदगार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय के व्यक्त किये। वे विश्वविद्यालय में 31 अक्तूबर से 9 नवम्बर 2011 के बीच चलने वाले 'विदेशी हिंदी शिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम' के उदघाटन समारोह में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे।

इस अवसर पर **श्रीलंका, मॉरिशस, हंगरी, न्यूजीलैंड, रशिया, क्रोएशिया, बेल्जियम, चीन व जर्मनी से आए हिंदी शिक्षक कुलसचिव डॉ. कैलाश खामरे, प्रो. के. के. सिंह, विशेष कर्तव्याधिकारी नरेंद्र सिंह, प्रो. राम शरण जोशी, प्रो. महेंद्र कुमार**

पाण्डेय, डॉ. फरहद मलिक, प्रो. रवि चतुर्वेदी, बी एम मुखर्जी सहित चीन, थाईलैंड तथा मौरिशस के छात्र प्रमुखता से उपस्थित थे।

कुलपति राय ने विदेशों से आए 9 लोगों का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि विदेशी शिक्षकों के लिए हिंदी की पढाई में आने वाली दिक्कतों को सुलझाने के लिए किया गया यह दुसरा आयोजन है। इससे पहले इसी वर्ष 3 से 15 जनवरी के बीच पहला आयोजन किया गया था। विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्य के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा को लेकर गांधी जी के सपने को साकार करने के लिए भारतीय संसद के द्वारा इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी है। हिंदी को विश्वभाषा बनाने का सपना है और विवि के एक्ट में भी इसका उल्लेख है। इस दिशा में हम एक समन्वयक की भूमिका निभा रहे हैं। इस प्रकार का अभिविन्यास कार्यक्रम इसी दिशा में उठाया गया एक प्रभावी कदम है। उन्होंने विदेशी शिक्षकों

को आश्वस्त किया कि हिंदी की पढाई के लिए पाठयसामग्री बनाने के लिए हम पूरी तरह मदद करना चाहते है और इसके लिए देशभर के विद्वानों को बुलाकर हिंदी के प्रचार के लिए पाठयक्रम बनाना चाहते हैं। विश्वविद्यालय में मौजूद आधुनिक कम्प्यूटर लैब और अन्य संसाधनों का प्रयोग भी आप कर सकते हैं। उन्होंने इस प्रकार के आयोजन के पीछे विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ स्थायी रिश्ता कायम करने की मंशा जाहीर करते हुए कुलपति राय ने कहा कि विश्वविद्यालय ने विभिनन विश्वविद्यालयों के साथ एमओयू किया है और आने वाले दिनों में अनेक देशों के विश्वविद्यालयों के साथ हम जुडना चाहते है। भाषा विद्यापीठ के सभागार में आयोजित उदघाटन समारोह में विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति एवं विदेशी शिक्षण प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रो. ए. अरविंदाक्षन ने कहा कि सभी विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ हमारा संपर्क स्थापित होगा और आदान-प्रदान को बढावा दिया जाएगा। विवि के एक्ट का अनुपाल करते हुए लक्ष्य की पूर्ति करेंगे। उन्होंने इस आयोजन के पीछे कुलपति विभूति नारायण राय की मेहनत और लगन की सराहना करते हुए उन्हें संकल्पधर्मी की उपाधि दी। कार्यक्रम का प्रास्ताविक भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. उमाशंकर उपाध्याय ने किया। संचालन सहायक प्रोफेसर डॉ. अनिल दुबे ने तथा धन्यवाद ज्ञापन रीडर डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ने किया।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी

HINDI IS THE IDENTITY OF MODERN INDIA –Vibhuti Narain Rai

MGIHU's ten days orientation trainining prog. for foreign Hindi teachers

Wardha, 31 October, 2011 Mahatma Gandhi International Hindi University (MGIHU), Wardha have organized ten days (October 31 – November 9, 2011) second Orientation Programme for Hindi Teachers those are teaching Hindi in their countries. In the opening ceremony Sri Vibhuti Narain Rai, Vice Chancellor of the University welcomed the foreign teachers. He said, according to wikipedia, next to Chinese Hindi is the second largest spoken language in the world. At present around 150 Universities are having Hindi, Indology or South Asian Studies department outside of India. He stressed on the importance of learning Hindi as one of the most important living Language in India. He also said that our university is taking efforts to coordinate with the international universities and its related societies which are serving for the teaching and spreading of Hindi Language globally. To solve the problems faced by those trainers in foreign lands, the University has framed a training programme to assist them. Pro–Vice Chancellor and concurrently Director of the International Orientation Programme Cell, Prof. A. Arvindakshan welcomed the teachers. Prof. Umashankar Upadhaya, Dean, School of Language also addressed in the programme and gave direction of the course curricullam. Among ten participants from nine countries there are teachers from New Zealand, Mauritius, Belgium, Sri Lanka, China, Hungary, Russia, Croatia and Germany. In this ceremony the Chinese, Thai students and some eminent personalities were present.

B S Mirge

Public Relations Officer